रात्रि क्लास 2-11-68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?

बच्चे क्या अनुभव सुनाते हैं। जानते हैं बेहद के बाप को जानने से सभी कुछ मिल जाता है। कोई चीज़ मांगने की नहीं होती हैं। निश्चय बुधि जियन्ति। विश्व पर विजय भी पहने और विजय माला का दाना भी बनते हैं। विश्व पर विजय तुम्हारी थी। तुम भारत पर राज्य करते थे। अभी ऐसे तो नहीं कहेंगे। नर्क पर राज्य करते हैं। ~~विष्णु~~ ~~अर्थात~~ नर्क में गोते खाते हैं। स्वर्ग में राज्य करते थे। विष्णु अर्थात ल0ना0 सागर में दिखाते हैं ना। विष्णु है ल0ना0 का जोड़ा रूप। ऐसा चार भुजा वाला देवता कोई होता नहीं हैं। चतुर्भुज डांस भी करते हैं। अभी तुम जानते हो विश्व पर राज्य स्थापन हो रही हैं। हम ब्राह्मण ही अपने लिये श्रीमत पर स्थापन करते हैं। वह सिपाई लोग राजा के लिये लड़ते हैं। तुम अपनी राजधानी अपने लिये ही स्थापन करते हो। तुम कहेंगे हमारी राजधानी है। स्वर्ग के हम मालिक हैं। ऐसे कहेंगे यह खेल है स्वर्ग के मालिक फिर नर्क में आना। नर्क का मालिक कहना शोभता नहीं। नर्क के निवासी हैं जरूर। भारत इस समय नर्क है। कलियुग है। पुरानी दुनिया में पुराना भारत में पुरानी दिल्ली। जब नई दिल्ली थी तो परिस्तान कहा जाता था। दुनिया नई और पुरानी होती हैं। तुम समझते हो बाबा आया हुआ है श्रीमत दे रहे हैं नई दुनिया के लिये। फिर यह पुरानी दुनिया न रहेगी। यह ल0ना0 नई दुनिया के मालिक हैं। बाबा ने समझाया है 84 जन्मों बाद अभी अ कलियुग में यह अभी अन्तिम जन्म है। बेगर हैं। भारत बराबर सोने की हीरे की थी। अभी लोहे की कहेंगे। सतोप्रधान से तमोप्रधान। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान कैसे बनना होता है यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। तुमको श्रीमत मिली हुई है। श्रीमत से ही आसुरी श्रेष्ठ और आसुरी मत से भ्रष्ट। अभी तुम समझते हो फिर यह सभी बातें बिल्कुल ही भूल जावेंगे। इतना भूलते हो जो बाप टीचर गुरु तीनों को ही भूल जाते हो। बाप ने समझाया है मैं टीचर भी हूं सर्व की सदगति दाता भी हूं। स्वर्ग में एक ही धर्म होता है। स्वर्ग को सदगति, शान्ति धाम को गति कहा जाता है। तो अभी जब कि तुमको इतनी राजधानी मिलती है। बाप कहते हैं मुझ बाप की श्रीमत पर नहीं चलेंगे? आसुरी मत पर चल कर कितनी अपनी बुरी गति की है। अपरम अपार दुःख पाये हैं। समझते भी हैं श्रीमत पर चल पवित्र बनना चाहिए। परन्तु परवश अर्थात रावण के वश हो जाते हैं। बाप कहते हैं तुमको ऐसा गुणवान बनना है।

इस समय बाबा को तुम कहते हो पिताश्री। क्योंकि श्रेष्ठ और श्रेष्ठ बनाने वाला है। इस दुनिया में तो सभी मनुष्य मात्र दुःखी ही दुःखी हैं। कोई दिवाला मारते हैं। अभी बाप मिला तो यहां का अपना हिसाब किताब समेट लेना चाहिए। यह पुरानी चीज़ है ना। सभी से बुधि का योग तोड़ एक से जोड़ना पड़ता हैं। कहते हैं बाबा आप आवेंगे तो हम आप का ही बनेंगे। बाप स्वर्ग की रचना रचते हैं। तो जरूर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। टीचर से जब तक पढ़ते हो तो टीचर से बुधि योग लगानी चाहिए पढ़ना भी चाहिए। सिर्फ समझना है 84 का चक्र कैसे फिरता हैं। बाप चैतन्य बीज रूप है। उनको सारे झाड़ का ज्ञान है। जड़ झाड़ को भी तुम चैतन्य ही जानते हो ना। यह भी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ हैं। यह बाप ही आकर बताते हैं। बड़ के झाड़ का मिसाल है ना। कितनी शाखाएं निकलती हैं। सैकड़ों। बहुत लोग जाते हैं। फाउन्डेशन है नहीं। देवी देवता धर्म का भी ऐसे हैं। फाउन्डेशन है नहीं। बाकी सभी खण्ड हैं। भारत अविनाशी खण्ड है। तुम राज्य करते थे। अभी तुम पतित हो। अ इनको स्वर्ग में नहीं कहेंगे। बच्चों को समझ मिल रही है। बाप कहते हैं पवित्र रहने लिये प्रतिज्ञा करनी है हम दोनों ही पवित्र रहेंगे। बेहद का बाप फरमाते हैं तो उन से पूरा वचन देना चाहिए। तुम बच्चों का ही कल्याण होगा। यह है रूहानी पढ़ाई। रूहानी बाप बैठ पढ़ाते हैं। यह है स्प्रीचुअल नालेज। भगवानुवाच कहते हैं हे बच्चों हमारों को पढ़ाने आये हैं। अपने को आत्मा समझो। ऊंच ते ऊंच बाप पढ़ा रहे हैं। क्या? स्वर्ग की राजाई पद। प्राचीन भारत का राजयोग सिवाय बाप के कोई सिखाये नहीं सकता है। यह तुम बच्चों को सभी को सुनाना है। बाप कहते हैं मैं आया हूं रावण राज्य से लिबरेट करने। अभी भारत से—

योग लगाओ तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। तुम अपनी राजधानी पा लेंगे। स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। यह रूहानी पिता (स्प्रीचुअल फादर) स्प्रीचुअल बच्चों को कहते हैं मैं बेहद का बाप हूं। कलकत्ते में कानफ्रेन्स हुई थी परन्तु पूरा समझा न सके। स्प्रीचुअल नालेज स्प्रीचुअल फादर ही दे सकते हैं। वही रूहों को नालेज देते हैं। मनुष्य मनुष्य को स्प्रीचुअल नालेज दे नहीं सकता। देवतायें भी नहीं दे सकते। सिर्फ स्प्रीचुअल फादर ही स्प्रीचुअल बच्चों को नालेज देते हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह है भारत का प्राचीन ईश्वरीय योग। यह रूहानी बाप है। जिस्मानी कोई भी मनुष्य यह नालेज दे नहीं सकता है। विलायत से तुम्हारा नाम निकले तो यहां भी तुम्हारा बहुत नाम हो जाये। महर्षि आदि जाते हैं ना। फिर यहां भी कितना नाम हो गया है। अपना एरोप्लेन भी है। बहुत शास्त्र पढ़ा हुआ है। हठयोग बैठ सिखलाते हैं। जैसे महर्षि आया। नाटक वाले एक्टर्स को पकड़ा था। उनको समझाया छोड़ना नहीं होगा। मास आदि भी भल खाओ। ऐसे बहुत हैं। बड़े2 लखपति करोड़पति जाते हैं, मास मदिरा आदि कोई भी बन्द नहीं करते। सिर्फ कहते हैं अल्ला हूं अल्ला हूं। ईश्वर सर्वव्यापी है। तुम बोलो हरेक में 5 विकारों की प्रवेशता है। सर्वव्यापी ईश्वर नहीं है। सर्व में व्यापी 5 — विकार है। पहले पहले नम्बर में है काम विकार शत्रु है जिसके लिये स्प्रीचुअल फादर कहते हैं इन विकारों पर जीत पाने से तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। ऐसे2 रिफाईन कर लिखना चाहिए। दो चार बारी पढ़े रिफाईन कर तैयार करो फिर उन्हों को भेज देंगे। वह चाहे तो अखबार में भी डाल सकते हैं। थोड़ा खर्चा भी हो हर्जा नहीं है। अमेरिका के अखबार में डाल दो। जिससे समझ जाये कि हम भूले हैं। स्प्रीचुअल नालेज कोई भी मनुष्य नहीं दे सकता। सिवाय एक बाप के। वही नई दुनिया स्थापन करेंगे। उन विचारों को पता नहीं है पैराडाईज के मालिक यह लक्ष्मी नारायण हैं। तुम ही जानते हो औरों को भी समझा सकते हो। बाबा समझ जाते हैं तुम्हारे में भी नम्बरवार है। बाबा कहते हैं ड्रामा में अभी देरी है। अभी तुम्हारा नाम बाहर में हो तो बहुत आवाज फैल जाये। रिवोल्युशन हो जाये। बड़े आदमी आते हैं तो माईलों तक क्यु लग जाती है। निश्चय हो जाये यह साधारण तन में वही है तो कितनी बड़ी क्यू आबू से यहां तक हो जाये। बच्चों पर बाप का लव है ना। तब ते परमधाम छोड़ पतित दुनिया में आते हैं। बाप कहते हैं जिस भावना से ईश्वर समझते हैं उस भावना में मैं हूं ही नहीं। बाप करनकरावन हार है। ड्रामा अनुसार सभी कुछ होता है। खुद भी ड्रामा में बांधायमान है। स्प्रीचुअल रूहानी फादर ही स्प्रीचुअल नालेज बच्चों को देते हैं। रूहों को देते हैं। वही सृष्टि की चक्र की नालेज। जिस नालेज को जानने से विश्व के मालिक बन जाते हो। यही है योग और नालेज। नालेज है सृष्टि चक्र की। योग है बाप के साथ। कितना सहज है। मैगजीन जो लिखते हैं वह नालेज में सबसे नीचे हैं। बाप ऐसे देते हैं लिख कर आना। सारा आधार है इस पर। स्वर्ग की स्थापना कैसे होती है यह कोई भी नहीं जानते। तुम जानते हो तो तुम लिख कर बताओ जो वह समझ जाये। बड़ी बात तो नहीं है ना। इसको कहा जाता है बिचार सागर मंथन करना है। यह तुम जानते हो कितना बार बाबा ने आकर पढ़ाया है। फिर भी पढ़ाते रहो। तुम तो वही हो ना। कहते हैं बाबा आप वही हो। बाप भी कहते हैं तुम वही हो। कल्प कल्प तुमको पढ़ाता हूं। पढ़ाई भी बड़ी सहज है। बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि तो जन्म जन्मान्तर पढ़ते आये हो। फिर क्या हुआ? तमोप्रधान ही बने हो। उतरते ही आये हो। भक्ति मार्ग पूरा तो होना ही है। सतयुग में कोई भी शास्त्र आदि नहीं होते। भक्ति मार्ग की कोई निशानी नहीं। बच्चों को कितना समझाते हैं। सभी समझाकर फिर भी कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। अपने को आत्मा समझो। और बाप को याद करो। वह बाप ही टीचर है सद्गुरु है। तुमको भी मरजीवा भी बनाते हैं। एडाप्ट कर खुद ही पढ़ाते हैं। फिर खुद ही सद्गुरु बन सभी को ले जाते हैं। सतयुग में तो बहुत कोई थोड़े मनुष्य होते हैं। तुम अभी संगम पर हो तब समझते हो। यह है पुरानी दुनिया, वह है नई दुनिया। पुरानी को नया बाप ही बनाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।